

# भारत की जलवायु

भारत की जलवायु को समझने के लिए सर्वप्रथम मानसून को समझना पड़ेगा।

## मौसम

एक सिमित क्षेत्र के अंतर्गत दिन-प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन को मानसून कहते हैं। मौसम हर दिन बदलता रहता है। अगर हम मौसम को प्रतिदिन देखते हैं तो उसके स्वभाव का पता चल जाता है। जब हम किसी क्षेत्र के मौसम पर हमेशा नजर रखते हैं और उसपर लगातार 30 सालों तक नजर रखते हैं, तो हमें एक बहुत ही बेहतरीन अनुभव लग जाता है। यह मौसम 30 सालों में कैसा रहेगा यही 30 साल का अनुभव और औसत को जलवायु कहते हैं। अर्थात् किसी स्थान अथवा प्रदेश में लम्बे समय के तापमान, वर्षा, वायुमण्डलीय दाब तथा पवनों की दिशा एवं गति की समस्त दशाओं के योग को जलवायु कहते हैं। जलवायु कभी चेंज नहीं होती है। जब हम जल को आग पर गर्म करते हैं और वह वाष्प बनकर ऊपर वायु में चला जाता है और यही जलवायु कहलाता है।

**भारत में जलवायु को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारक-**

**(1) पर्वतों की स्थिति** - भारत की जलवायु में पर्वत किस जगह पर है यह भी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। Ex: (a) पश्चिमी तथा पूर्वी घाट पर्वत

(b) हिमालय पर्वत - उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत उत्तरी पवनों से हमें अभेद सुरक्षा प्रदान करता है। जमा देने वाली महाठण्डी ( $-60^{\circ}\text{C}$ ) पवनों उत्तरी ध्रुव से चलकर मध्य एवं पूर्वी एशिया से भारत की ओर बढ़ती है। उन हवाओं को हिमालय पर्वत रोक लेता है।

(c) अरावली पर्वत

**(2) समुद्र से दूरी** - समुद्र से आप जितनी दूर जाइएगा मौसम में आपको उतना ही चेंजिंग देखने को मिलेगा। समुद्र की पानी न जल्दी गर्म होती है न ही जल्दी ठण्डी होती है। जो-जो शहर समुद्र के किनारे होता है। वहाँ न ज्यादा गर्मी न ही ज्यादा ठण्डी पड़ती है। वहाँ का मौसम औसत रहता है।

**(3) विषुवत रेखा से दूरी** - जितना ज्यादा हम विषुवत रेखा से दूर रहेंगे उतना ही ज्यादा गोरा रहेंगे और जितना ही नजदीक रहेंगे उतना ही ज्यादा काले रहेंगे। विषुवत रेखा से जितनी ही दूरी पर रहेंगे आपकी जलवायु उतनी ही अलग रहेगी। Ex: केरल और तमिलनाडु के लोग काले और जम्मू कश्मिर के लोग गोरे

विषुवत रेखा से जितने हम दूरी पर जाएंगे गर्मी की मात्रा कम होती जायेगी और आपकी जलवायु हल्का-हल्का चेंज होने लगेगा।

**(4) समुद्र तट से ऊँचाई** - दुनिया के किसी भी ऊँचाई को हम समुद्र तल से मापते हैं। अगर आपकी जगह की ऊँचाई जितनी ज्यादा रहेगी तो ठंड उतनी ही ज्यादा पड़ता है।

**(5) मानसून** - हमारी जलवायु मानसून पर निर्भर करती है। वैसा काला बादल जिसमें बारिस कराने की मात्रा रहती है उसे मानसून कहते हैं। ये बादल जब पर्वतों से टकराते हैं तो वर्षा करा देते हैं और बहुत ज्यादा टकरा जाते हैं तो वहाँ बादल फट जाता है। जून-जुलाई में बादल बहुत ज्यादा बनते हैं क्योंकि इस समय सूर्य कर्क रेखा पर रहते हैं। सूर्य समुद्र के पानी को

गर्म कर देता है और पानी वाष्प बनकर ऊपर चला जाता है, यही वाष्प बादल बन जाता है। यह मानसून हल्का दाहिने ओर घुमकर चलता है। इस मानसून को अरावली पर्वत नहीं रोक पाती है क्योंकि वह समांतर है और यह उत्तराखण्ड में जाकर बहुत तेजी से हिमालय से टकराता है। यहाँ बादल बहुत अधिक आकर तेजी से टकरा जाते हैं और बहुत तेज बारिश होती है। इसी को बादल का फटना कहा जाता है।

## जलवायु

किसी खास जगह जिसके बारे में आपको सटिक जानकारी हो उसी को जलवायु कहते हैं। मौसम का अनुभव जब हमें हो जाता है तो उसका अंदाजा हमें लग जाता है और उसी अनुभव जलवायु कहलाता है। भारत की जलवायु हमेशा एक नहीं रहती है। हमारी हर चीज जलवायु पर ही निर्भर करती है। हमारे देश में एक जैसी जलवायु नहीं पायी जाती है। हमलोग जलवायु को ऋतुओं में बाँट रखे हैं।

**भारत में 4 प्रकार की ऋतुएं पायी जाती हैं-**

- |                 |   |            |   |            |
|-----------------|---|------------|---|------------|
| (1) शीत ऋतु     | - | 15 दिसम्बर | - | 15 मार्च   |
| (2) ग्रीष्म ऋतु | - | 15 मार्च   | - | 15 जून     |
| (3) वर्षा ऋतु   | - | 15 जून     | - | 15 सितम्बर |
| (4) शरद ऋतु     | - | 15 सितम्बर | - | 15 दिसम्बर |

**(1) शीत ऋतु** - यह 15 दिसम्बर से 15 मार्च तक होता है। ऋतु को सबसे ज्यादा चेंज करने में मुख्य भूमिका सूर्य का होता है। हमारे पृथ्वी पर तीन महत्वपूर्ण रेखा हैं - कर्क रेखा, मकर रेखा, विषुवत रेखा

जब शीत ऋतु का समय होता है तो सूर्य मकर रेखा पर चला जाता है, जिस वजह से भारत की दूरी सूर्य से बढ़ जाती है। जिस कारण भारत में ठंड पड़ने लगता है। ठंडी हवाएं भारी होती हैं क्योंकि इसमें नमी की मात्रा अधिक होती है। जिस कारण हवाएं भारी होकर निचे बैठ जाती हैं जिसके कारण उत्तर भारत में ठंडी हवाएं बहुत तेजी से चलने लगती हैं क्योंकि इसको बहने का रास्ता नहीं मिलता है। उत्तर भारत में हिमालय खड़ा है और हिमालय पूरा बर्फ का है। उससे टकराकर हवाएं बहुत तेजी से निकलती हैं। जिसे युपी, बिहार, पूरे उत्तर भारत के लोग इसे शितलहर कहते हैं। इस ठंड के दिन में वर्षा नहीं होना चाहिए क्योंकि वर्षा के लिए भाप बनना जरूरी है। ठंड के दिन में वर्षा नहीं होना चाहिए लेकिन ठंड के दिनों में भारत में दो जगहों पर थोड़ी वर्षा हो जाती है। उत्तर भारत और तमिलनाडु में जनवरी के महीने में थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो जाती है। ठंड के दिन में भारत में वर्षा का कारण मानसून नहीं है। ठंड के दिन में सूर्य मकर रेखा पर चला जाता है और भारत में उच्च दाब बन जाता है।

**(2) ग्रीष्म ऋतु** - यह 15 मार्च से 15 सितम्बर तक होता है। गर्मी के दिन में सूर्य जून के महीने होने के कारण कर्क रेखा पर चला आता है और वहां की हवाओं को गर्म करके ऊपर उठा देता है जिस वजह वहाँ हवाओं की कमी देखने को मिलता है। वहाँ की कमी को पूरा करने के लिए हवाएं बहुत तेजी से चलने लगती हैं और आंधी का रूप ले लेती हैं। इस हवाओं को अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नामों से जानते हैं। बंगाल में इसे काल वैशाखी, पंजाब में धुल भरी आंधी, यूपी-बिहार में इसे लु, असम में वोडो-चिल्ली।

★ बादल को वर्षा ऋतु में बरसना चाहिए लेकिन कभी-कभी यह पहले ही वर्षा करा देता है जिसे Premansoon कहते हैं।

- ★ मानसुन जब बरसता है तो मौसम ठण्डा रहता है लेकिन Premansoon जब बरता है तो गर्मी और वर्षा दोनों होने लगती है। यह किसी-किसी चीज के लिए फायदा हो जाता है; जैसे अंगूर, आम, फूल। कभी-कभी प्री मानसुन अच्छा साबित हो जाता है। असम में चाय की खेती बहुत अच्छी हो जाती है इसी कारण असम के लोग इस प्री मानसुन का इंतजार करते हैं और कहते हैं ये वर्षा नहीं ये झरना के समान है। इसलिए असम के लोग इसे Tea shower कहते हैं। कर्नाटक में फूलों की खेती है और फूलों की खेती के लिए यह वर्षा अच्छा काम कर देता है, तो वहाँ के लोग इसे चेरी ब्लासम, केरल के लोग इसे Mango Shower कहते हैं।

**(3) वर्षा ऋतु** - यह 15 जून से 15 सितम्बर तक होता है। इस समय मानसुन का आगमन होता है। मानसुन की उत्पत्ती अरबी भाषा के मासिम शब्द से हुई है जिस का अर्थ होता है ऋतु के अनुसार वायु की दिशा में परिवर्तन। यह दिशा परिवर्तन कर लेता है। भारत में मानसुन दक्षिण-पश्चिम दिशा से जून के पहले सप्ताह में केरल में प्रवेश करता है और 15 जुलाई तक पूरे भारत में फैल जाता है। सबसे अंत में पंजाब में पहुँचता है। सबसे ज्यादा वर्षा मेघालय के मानसीराम में 1400 cm वर्षा होती है। रेन गेज से वर्षा को मापते हैं। सबसे कम वर्षा लेह में होती है। लौटते मानसुन से वर्षा आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में होते हैं।

**भारत में मानसुन दो दिशा से आती है-**

भारत में आने वाला मानसुन दक्षिण-पश्चिम मानसुन होता है। यह मानसुन 80% वर्षा कराती है।

भारत में लौटने वाला मानसुन उत्तर-पूरब मानसुन होते हैं जो 17% वर्षा कराती है।

शेष 3% वर्षा पश्चिमी विक्षोभ कराती है।

**(4) शरद ऋतु** - यह 15 सितम्बर से 15 दिसम्बर के बीच होता है। इस समय मानसुन लौट चुका होता है। मानसुन लौटने के कारण आसमान पूरी तरह साफ हो चुका रहता है जिस कारण चिलचिलाती धुप पड़ती है। इस समय मौसम औसत रहता है क्योंकि सूर्य हमसे दूर जा रहा होता है।

○○○